

वैश्वीकरण

मोटे शब्दों में समझने का प्रयास करें तो, वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जो दुनिया की सभी अर्थव्यवस्थाओं को जोड़ती है और उन्हें सामंजस्यपूर्ण परस्पर निर्भरता में संरेखित करती है। यह देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं, सूचना, प्रौद्योगिकी, पूंजी और यहाँ तक कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान के मुक्त प्रवाह को संदर्भित करता है। वैश्वीकरण संचार और परिवहन प्रौद्योगिकियों द्वारा संचालित है, जिससे दुनिया एक वैश्विक गाँव बन गई है। यह व्यवसायों को अन्य देशों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचने में सक्षम बनाता है।

वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत हैं:-

1. व्यापार उदारीकरण: वस्तुओं और सेवाओं की मुक्त आवाजाही के लिए व्यापार बाधाओं को हटाना।
2. तकनीकी प्रगति: नवाचार जो वैश्विक संचार और डेटा विनिमय को सुविधाजनक बनाते हैं।
3. सांस्कृतिक एकीकरण: सीमाओं के पार सांस्कृतिक मूल्यों, विचारों और परंपराओं का आदान-प्रदान।
4. विदेशी निवेश: सीमा पार निवेश में वृद्धि, जिससे आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण

1990 के दशक की शुरुआत में आर्थिक सुधारों की शुरुआत के साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था ने वैश्वीकरण की अपनी प्रक्रिया को गंभीरता से शुरू कर दिया। इसने अपने बाजारों को विदेशी निवेश के लिए खोल दिया, उद्योगों को प्रवेश और विज्ञापन पर लगे विभिन्न प्रतिबंधों से मुक्त कर दिया, और ऐसी नीतियाँ लागू कीं जिनसे अर्थव्यवस्था का उदारीकरण एक केंद्रीय लक्ष्य बन गया। ये सभी परिवर्तन भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में शामिल करना आसान बनाने, व्यापार में सुधार लाने और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण थे।

भारत के वैश्वीकरण के क्षेत्र में उठाए गए कुछ प्रमुख कदम:-

1991 के आर्थिक सुधार: भारत सरकार ने आर्थिक स्थिरता से निपटने, राजकोषीय घाटे को कम करने और विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए उदारीकरण नीतियाँ लागू कीं। इन उपायों में व्यापार शुल्क कम करना, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की अनुमति देना और सरकारी उद्यमों का निजीकरण शामिल था।

आईटी और सेवा क्षेत्र में वृद्धि: वैश्वीकरण के कारण भारत के आईटी और सेवा उद्योग फले-फूले, जिससे देश सॉफ्टवेयर विकास और व्यावसायिक आउटसोर्सिंग के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। इन्फोसिस, विप्रो और टीसीएस जैसी कंपनियाँ प्रौद्योगिकी सेवाओं में वैश्विक अग्रणी बन गईं।

विदेशी व्यापार में वृद्धि: भारत के निर्यात और आयात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे कपड़ा, रसायन और सॉफ्टवेयर सेवाओं सहित भारतीय वस्तुओं के लिए नए बाजार खुले। अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौतों और साझेदारियों ने देश के व्यापार को बढ़ाने में मदद की।

नोट -भारत की अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण से प्रतिस्पर्धात्मकता, तकनीकी उन्नति और अधिक विविध आर्थिक संरचना को बढ़ावा मिला है।

